International Journal of Applied Research 2021; 7(1): 400-403

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(1): 400-403
www.allresearchjournal.com
Received: 16-11-2020
Accepted: 18-12-2020

उमाशंकर कुशवाहा
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव
प्राचार्य, श्रीराम कालेज, रौरा जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
उमाशंकर कुशवाहा
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

उमाशंकर कुशवाहा, डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से 0.31 छात्र एवं 0.63 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 38.13 छात्र एवं 37.19 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 45.00 छात्र एवं 47.50 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 16. 56 छात्र एवं 14.69 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है। शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कुटशब्दः सतना जिला, किशोरावस्था, मानवीय मूल्य, शैक्षणिक उपलब्धि

प्रस्तावनाः
मूल्य को यदि हम साधारण शब्दों में परिभाषित करें तो यह किसी वस्तु की कीमत होती है परन्तु जब हम इसे मानव जीवन से जोड़ देते है। उसके आदर्श किसी चीज को करने का तरीका उसकी विचारधारा आदि से जुड़ जाते है। हर व्यक्ति के जीवन के कुछ मूल्य होते है जो उसके परिवार, उसके अनुभवों से मिले होते हैं। उन्हें वह अपने व्यक्तिगत मूल्य कहता है जिस पर चलकर वह अपना जीवन आधार बनता है। प्रत्येक युग के अपने कुछ स्थापित मूल्य होते हैं जिन पर उस युग के लोग चलकर अपनी पहचान बनाते हैं जैसे प्राचीनकाल में आध्यात्मिकता, मध्यकाल व साम्राज्यवादी काल में स्वामिभक्ति और देशभक्ति। परन्तु वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है इसमें लोग भौतिकवादिता से प्रभावित है। इस कारण आज लोगों में मूल्यों के प्रति आस्था कम हो गई है जिस कारण लोगों का नैतिक, सामाजिक पतन होता है जिस कारण लोगों का नैतिक स्वार्थ सिद्धि हो अधिक महत्व देता है और अन्य लोगों की क्या वह अपने कर्तव्यों में भी अपना स्वार्थ देखता है अतः उपरोक्त परिस्थिति को देखते हुए यह अध्ययन किया गया कि वर्तमान समय में लोग अपने मूल्यों के प्रति खास कर विद्यार्थी कितने सचेत हैं क्योंकि आने वाली भावी पीढ़ी का भविष्य उनके द्वारा ही बनाया जाना है।

माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर शिक्षा की संरचना में मध्य का स्तर होता है जहॉ पर से विद्यार्थी किशोरावस्था में गुजरता है क्योंकि इसके पहले किशोरावस्था की पूर्वावस्था तथा बाद की अवस्था परिपक्वता बढ़ाती चली जाती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों में ऊर्जा की अपार मात्रा होती है जिससे वह विभिन्न गतिविधियों में लगा रहता है। शिक्षा का उद्देश्य ही सर्वांगीण विकास का है जिसे शिक्षण संस्थाएँ सकारात्मक दिशा प्रदान करते हुए ऊर्जा प्रवाहमय को दिशा के उद्देश्य की तरफ ले चलते हैं जिसमें विद्यालयी परिवेश उसकी ऊर्जा स्तर को पोषण प्रदान करते हुए लक्ष्य की तरफ गतिशील करते हैं। विद्यार्थियों के विकासशीलता में समाज के योगदान को झुठलाया नहीं जा सकता क्योंकि सामाजिक परिवेश से ही वह प्रेरक दिशा प्रदान करता है जिससे भावी नागरिकता का प्रशिक्षण किशोरों को प्राप्त होता है और नवीनीकरण का प्रत्यय विचारों में, ज्ञानवृद्धि में, पहनावा, भोजन, चिकित्सा, यांत्रिकी इत्यादि में आता है, क्योंकि यह संसार मिथ्या होने के साथ–साथ परिवर्तनशील भी है। विद्यार्थी भी अपने में परिवर्तनशीलता के साथ–साथ परिपक्वता की तरफ बढ़ता है जिसमें विश्वबंधुत्व का भाव वैश्वीकरण का रूप ले चुका है अर्थात् पूरा विश्व गॉवों जैसी सुविधाओं में सूचना और तकनीकी की सहायता से बदल चुका है। गॉवों की सुख–सुविधाएँ जैसे व्यवस्थित थी, ठीक उसी प्रकार विश्व के सभी लोग एक–दूसरे की सुख व सुविधाओं से परिचित होने लगें हैं

जिससे वे अपने को भी उसी तौर–तरीके में सभी क्षेत्रों के लिये तैयार करते हैं और इन प्रक्रियाओं को ही आधुनिकीकरण कहा जाता है। आधुनिकीकरण तथा भौतिकता के इस युग में स्वाभाविक है कि विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति सोच और प्रत्याशा भी बदल रही है जिससे उनकी शैक्षिक आकांक्षा में भी वृद्धि व परिवर्तन होना शुरू हुआ है। आधुनिकता व वैज्ञानिकता के मूल्य, परम्परागत् मूल्यों का स्थान लेने लगे हैं क्योंकि उन्हें प्राचीन कहते हैं, जनरेशन गैप करार दिया जा रहा है जिससे परम्परागत् मूल्यों की क्षति हो रही है और नैतिकता तथा मानवता का लोग होता जा रहा है, यही भाव आज वृद्धों को अलग–अलग करके रख दिया है, अर्थात् जीवन के मूल्यों में गिरावट हो रही है। विद्यार्थी वर्तमान परिवेश में अपने को स्थापित करने का प्रयास कर रहा है जिससे उसमें आधुनिकीकरण, शैक्षिक आकांक्षा के स्तर तथा जीवन मूल्य किस प्रकार एक–दूसरे से संबंधित हैं, और शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी छाप क्या पड़ रहीं है? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर जानना ही प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का लक्ष्य है जिसके लिये यह अध्ययन किया जा रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता

मूल्य के संबंध में कहा जाता है कि मूल्य का अर्थ हमेशा निश्चयात्मक होता है यही कारण है कि मूल्य अच्छाई के समानार्थ में प्रयोग किया जाता है और सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाये, तो यह विदित होता है कि जो अच्छा है उसे ही लोग धारण करते हैं। मूल्य शिक्षा की आवश्यकता तो सदैव रही है, आज भी है और कल भी होगी। आज तो इसकी बहुत अधिक आवश्यकता है– बिना मूल्यों के मनुष्यों का व्यवहार निश्चित नहीं हो सकता, नियमित नहीं हो सकता। मनुष्य के आचार–विचार को सही दिशा देने के लिए मूल्य शिखा आवश्यक होती है। आज हमारे देश ही नहीं संसार में मूल्यों में ह्रास हो रहा है। मूल्यों में ह्रास का अर्थ है समाज द्वारा स्वीकृत आदर्श एवं मानदंडों को अपने अन्तःकरण में न उतारना और उनके अनुसार आचरण न करना। हमारे देश की तो अजीब स्थिति है, हम पुराने मूल्य छोड़ते जा रहे हैं और नये मूल्य निश्चित नहीं कर पा रहे हैं। अतः आज मूल्य शिक्षा अति आवश्यक है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- सतना जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की जानकारी प्राप्त करना।
- शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के विद्यार्थियों की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पनाओं के निर्माण के बिना शोध कार्य करना लगभग असम्भव है। शोधार्थी को परिकल्पना को निर्मित करने के पूर्व यह भी जानना आवश्यक होता है कि वह किस प्रकार की परिकल्पना का चयन अपने शोध कार्य करने हेतु कर रहा है, क्योकि विभिन्न वैज्ञानिकों ने परिकल्पना के कई प्रकार बनाए है, जैसे– मैकयुगन ने परिकल्पनाओं को दो भागो में विभक्त किया है। सार्वभौमिक परिकल्पना (Universal Hypothesis) एवं अस्तित्व मूलक परिकल्पना (Existeutial Hypothesis) जबकि कार्लिंगर ने तीन प्रकार की परिकल्पनाओं का उल्लेख किया हैः– सरल परिकल्पना, नकारात्मक परिकल्पना एवं गुप्त सम्बन्ध व्यक्त करने वाली परिकल्पना। चेम्बरलिन ने एक अन्य प्रकार की बहुला परिकल्पना का उल्लेख किया है। रोलेल्ड फिशर ने उपर्युक्त परिकल्पनाओं से अलग शून्य परिकल्पना ;छनसस भ्लचवजीमेपेद्ध को स्वीकार किया है। इस परिकल्पना को सांख्यिकीय परिकल्पना भी कहते हैं।

शोध कार्य की परिकल्पना निम्नवत् है

शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), मझगवाँ, रामपुर बघेलान, नागौद, उचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक स्तर की विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किये गये है।

चूंकि सतना जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 4–4 विद्यालय कुल 32 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया जाएगा। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा जायेगा कि सभी विकासखण्डों के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संवंधित हो।

शोध कार्य के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 20–20 छात्र कुल 640 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार पद्धति हेतु किया जाएगा। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत ;ःद्धए ैण्क्ण्ए ष्जष् ज्मेज आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

शोध उपकरणः

शोधार्थी ने न्यादर्श में चयनित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं से उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली व परीक्षाफल के आधार पर किया गया है। इस शोध उपकरण को दो भागों में विभक्त किया गया है। इसके प्रथम भाग में हिन्दी भाषा के पाँच प्रश्न हैं तथा द्वितीय भाग में गणित विषय के पाँच प्रश्न रखे गये हैं।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण तथा शोध कार्य करने में सहायता मिलती है इनमें से

मुख्य रूप से कुमार, अरविन्द एवं सिंह, जय (2016)[1], पाण्डेय, के. पी., (1985)[2], गुप्ता एस.पी. (2001)[3], मेहता, सी. (1970)[4], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[5], शर्मा, रेखा और राय, राकेश (2013)[6] और यादव, रेखा (2017)[7] ने शोध विधि एवं विद्यार्थियों के मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

सतना जिले का सामान्य परिचय :

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृष्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थकता का स्तर			
		छात्र		छात्राएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 अंक से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (मानवीय मूल्यों का शैक्षणिक उपलब्धि का प्रभाव)	01	0.31	02	0.63
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (मानवीय मूल्यों का शैक्षणिक उपलब्धि का प्रभाव)	122	38.13	119	37.19
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (मानवीय मूल्यों का शैक्षणिक उपलब्धि का प्रभाव)	144	45.00	152	47.50
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (मानवीय मूल्यों का शैक्षणिक उपलब्धि का प्रभाव)	53	16.56	47	14.69

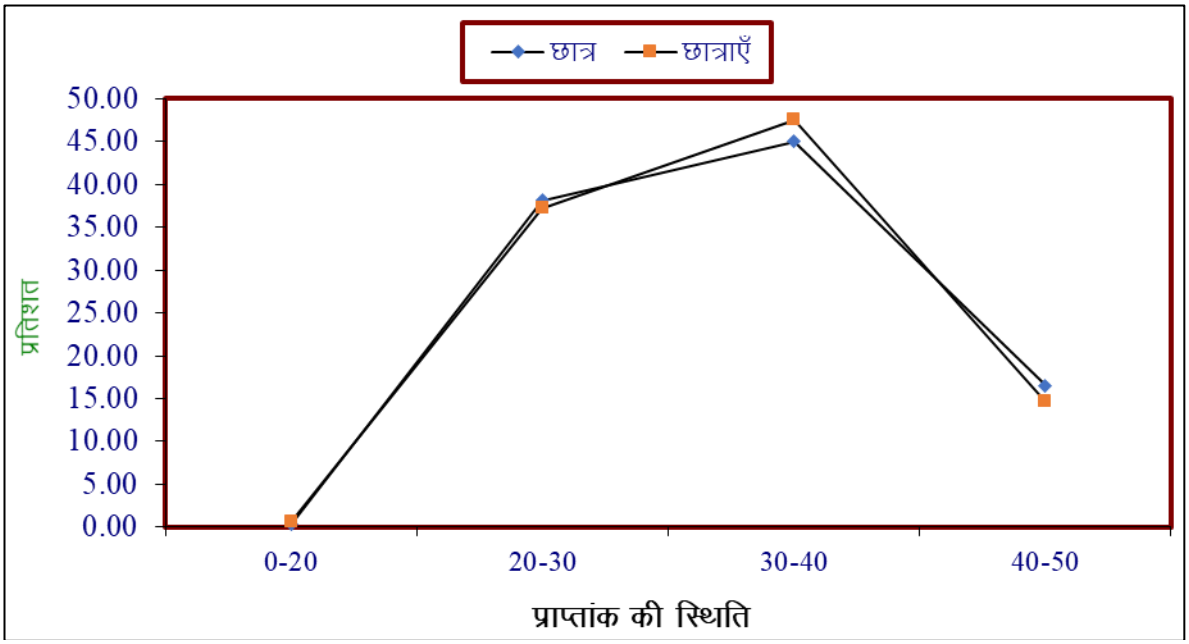

आरेख क्र.1: शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 एवं आरेख क्र. 1 में न्यादर्श हेतु चयनित शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि की जानकारी का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते है कि, शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 640 विद्यार्थियों में से 01 छात्र एवं 02 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 122 छात्र एवं 119 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 144 छात्र एवं 152 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 53 छात्र एवं 47 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से 0.31 छात्र एवं

0.63 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 38.13 छात्र एवं 37.19 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 45.00 छात्र एवं 47.50 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 16.56 छात्र एवं 14.69 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।

सारणी 2: शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		320	320
मध्यमान (M)		32.78	32.63
मानक विचलन (SD)		7.14	6.98
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		0.28	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्रों की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.78 तथा मानक विचलन 7.14 है। छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.63 तथा मानक विचलन 6.98 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 0.28 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.33 से कम है। अतः शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्नानुसार हैं–

1. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से 0.31 छात्र एवं 0.63 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 38.13 छात्र एवं 37.19 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 45.00 छात्र एवं 47.50 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 16.56 छात्र एवं 14.69 छात्राओं ने मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।
2. शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्रों की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.78 तथा मानक विचलन 7.14 है। छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.63 तथा मानक विचलन 6.98 है।
3. शोध क्षेत्र के किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. कुमार, अरविन्द एवं सिंह, जय, आजमगढ़ जिले के जिले के हाई स्कूल स्तर पर शैक्षिक तकनीकी प्रक्रिया का विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Multidisciplinary Education and Research 2016;1(10);32-34.
2. पाण्डेय, के.पी. – ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1985.
3. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण 2001.
4. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
5. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली 1993.
6. शर्मा, रेखा और राय, राकेश, किशोर अपराधियों के पारिवारिक तथा भौतिक वातावरण का सामाजिक आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन, शिक्षा और मनोविज्ञान अनुसंधान, 2013;3(1);126–128.
7. यादव, रेखा, वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध का उनके मूल्यों तथा शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन, Epitome: International Journal of Multidisciplinary research 2017; III(VI):169-178.